पर्वा प्रथम गांव मिजोरम के लुंगलई जिले में आता है. गांव में पच्चीस साल का पुण्य रतन चकमा बेतहाशा पहाड़ी की तरफ भाग रहा था. वह पहाड़ी पर चढ़ना चाहता था. उसके पास एक खबर थी, गांव में स्वास्थ्य सुविधा के अभाव में किस तरह एक के बाद एक तीन बच्चों की मृत्यु हुई है. एक साल की रेणुका चकमा, तीन साल की मोनो आगोश चकमा और एक महीने की होजपाना चकमा की मौत स्वास्थ्य सेवा के अभाव में हुई थी. बीमार होने के चार दर्जन से अधिक मामले उस छोटे गांव में और थे. लगातार संपर्क के बाद भी डॉक्टरों की कोई टीम जांच के लिए गांव में नहीं आई. गांववालों ने मुख्य चिकित्सा अधिकारी आरबी डे तक को हालात से अवगत कराया था. जब उसका भी कोई लाभ होता हुआ नजर नहीं आया तो उनके पास आशा की अंतिम किरण फोंगदांग ही बची थी.

फोंगदांग का शाब्दिक अर्थ है- ब्रेकिंग न्यूज, जिसका इस्तेमाल आज समाचार चैनल अपनी हर दूसरी-तीसरी खबर के साथ करते हैं. वैसे फोंगदांग टेलीविजन चैनल, अखबार या किसी पत्रिका के माध्यम से अपने लोगों तक नहीं पहुंचता. चकमा समाज के लोगों ने अपने लोगों के बीच में खबर पहुंचाने के लिए मोबाइल को माध्यम बनाया है.

जब पुण्य रतन चकमा पहाड़ी की तरफ भाग रहा था, उस वक्त वह इसी फोंगदांग के सिटिजन जर्नलिस्ट की भूमिका में था. उसे पर्वा के हालात की जानकारी फोंगदांग के जरिए चकमा समाज

‘ब्रेकिंग न्यूज’ से बदल रही दुनिया

कठिन जीवन स्थितियों में रह रहे मिजोरम के चकमा आदिवासियों की समस्याओं का हल करने की अनूठी पहल है- फोंगदांग. **आशीष कुमार ‘अंशु’** की रिपोर्ट

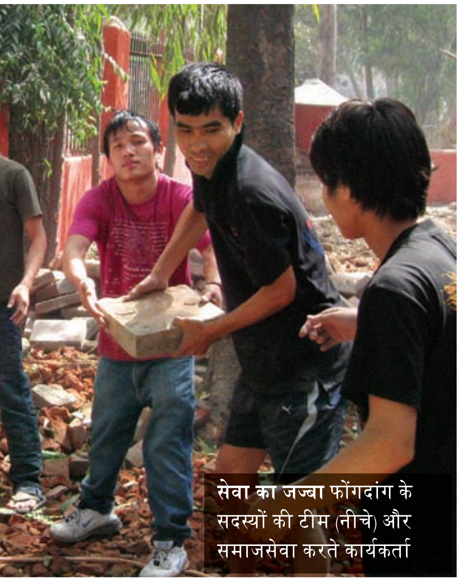

सेवा का जज्बा फोंगदांग के सदस्यों की टीम (नीचे) और समाजसेवा करते कार्यकर्ता

सभी फोटो : आशीष कुमार

जैसे ही दिल्ली से यह फोंगदांग जारी होता है कि अमुक रिजल्ट आ गया है, एसएमएस की बाढ़ आ जाती है

के सभी लोगों तक पहुंचानी थी. जिसकी प्रक्रिया यह होती है कि खबर एक खास नंबर पर भेजी जाती है, फिर फोंगदांग के जुड़े साथी खबर की सच्चाई की पुष्टि अपने सूत्रों से करते हैं.उसके बाद खबर इंटरनेट के माध्यम से एक साथ देश भर में मौजूद चकमा समाज के लोगों के हाथों में मौजूद मोबाइलों के लिए जारी कर दिया जाता है. चूंकि पर्वा में मोबाइल का नेटवर्क नहीं मिलता, इसलिए पुण्य रतन चकमा नेटवर्क की तलाश में पहाड़ी पर ऊपर की ओर भाग रहा था. बिना नेटवर्क के वह अपनी खबर फ्लैश नहीं कर सकता था. पहाड़ी की ऊंचाई पर पहुंचकर उसे नेटवर्क मिल ही गया. फिर झट से उसने गांव में बच्चों की हुई मौत, गांव में स्वास्थ्य की नाजुक स्थिति और चिकित्सा अधिकारियों की उपेक्षा की संक्षिप्त खबर एसएमएस के माध्यम से फोंगदांग के नंबर पर भेज दी. उनके एसएमएस के एक घंटा होते-होते यह फोंगदांग जंगल में आग की तरह फैल गया.फोंगदांग से जुड़े दिल्ली-मुंबई में रहने वाले चकमा समाज के लोगों ने उसी दिन प्रेस कॉन्फ्रेंस की और पूरी खबर अगले दिन मिजोरम के अखबारों में छपी. इसका नतीजा यह हुआ कि दूसरे ही दिन चिकित्सकों की टीम पर्वा पहुंची.

फोंगदांग मिजोरम चकमा डेवलपमेंट फोरम के अध्यक्ष हेमंत लारमा के दिमाग की उपज है. जब वे मिजोरम से बाहर आए थे, अपने साथ अपने समाज के लोगों के बुरे हालात की यादें लेकर आए कि किस तरह विपरीत परिस्थितियों में जीना उनके जीवन का हिस्सा बन चुका है. वे मिजोरम से यह तय करके निकले थे कि अपने पांव पर खड़ा होते ही वे अपने समाज के लिए एक टीम बनाएंगे, जो चकमा समुदाय के लिए मिजोरम से बाहर होकर भी कुछ बेहतर करने में सक्षम हो. आज जब दिल्ली में हेमंत अपना काम जमा रहे हैं, खुद से किया हुआ वादा नहीं भूले. उनकी टीम में पारितोष चकमा, विक्टर तालुकदार जैसे सक्रिय सदस्य हैं. इस टीम में दिल्ली से बाहर मुम्बई, हैदराबाद, चेन्नई, कोलकाता, शिलांग, गुवाहाटी, लुंगलई, रायपुर, आइजॉल, बेंगलुरु जैसे शहरों में एक-दो साथी मौजूद हैं. हेमंत के काम से जुड़े साथी दो तरह के हैं, एक जो उनके काम में अपनी आमदनी का बीस फीसदी देकर उनकी मदद करते हैं और दूसरे वे जो प्रतिदिन दो घंटा अपने शहर में मिजोरम के साथियों की मदद के लिए तैयार रहते हैं. शाम सात बजे के बाद देर रात तक हेमंत का फोन भी व्यस्त रहता है. यह समय होता है, मिजोरम से आने वाले फोन कॉल्स का. जब मिजोरम में किसी परीक्षा का रिजल्ट आता है, उस वक्त टीम के साथ जुड़े साथियों को ओवर टाइम करना पड़ता है. गांव में रहने वाले लोगों के पास इंटरनेट की सुविधा नहीं है. जैसे ही दिल्ली से यह फोंगदांग जारी होता है कि अमुक रिजल्ट आ गया, उसके बाद एसएमएस की बाढ़ ही आ जाती है. इन एसएमएस में फोंगदांग के माध्यम से खबर पाने वाले अपना रोल नंबर भेजते हैं और इंटरनेट पर रिजल्ट देखकर टीम से जुड़े सदस्य रिजल्ट एसएमएस करते हैं.

फोंगदांग के पास अपनी सीटिजन जर्नलिस्ट की एक अच्छी टीम है, जिसके लिए उन्होंने मिजोरम में प्वाइंट ऑफ कॉन्टैक्ट बनाया है. जहां टीम से जुड़े साथी होते हैं, वे अपने-अपने क्षेत्र की समस्या भेजते हैं. मॉडरेट करने वाली टीम उस समस्या को पढ़ती है और तय करती है कि इसे जारी करना है या नहीं. फोंगदांग पाने के लिए आवेदन करना आसान है लेकिन आवेदन की पहली शर्त है कि आवेदक चकमा होना चाहिए.

फोंगदांग की शुरुआत के अभी अधिक दिन नहीं हुए हैं. दिसंबर, 2009 को हेमंत लारमा के पास एक साथी का फोन आया कि मणि चकमा नाम की एक लड़की को शिलांग में एक दुर्घटना में काफी चोट आई है और उसे खून की जरूरत है. दिल्ली में बैठे हेमंत की समझ में कुछ नहीं आया कि शिलांग में दुर्घटना की शिकार एक लड़की की मदद कैसे करे. उसने फौरन एक साधारण-सा संदेश लिखा और शीर्षक दिया फोंगदांग.यह संदेश हेमंत ने फौरन शिलांग के अपने बीस-पच्चीस मित्रों को भेजा. संदेश से यह फायदा हुआ कि दुर्घटना के बाद जब तक मणि अस्पताल पहुंची, वहां खून देने के लिए कई लोग पहुंच गए थे.लेकिन उसके बाद भी मणि को बचाया नहीं जा सका.

इस घटना से हेमंत को यह बात समझ में आई कि एसएमएस के माध्यम से समुदाय की मदद हो सकती है. फिर फोंगदांग की शुरुआत हुई. फोंगदांग की घोषणा के बाद लगातार इससे जुड़ने के लिए लोगों के निवेदन आने लगे. आज एक हजार से अधिक लोगों को यह संदेश इंटरनेट के माध्यम से मोबाइल पर नियमित मिल रहा है.

जब कामतुली के आसपास के 45 गांव अनाज की कमी की वजह से गंभीर रुप से भुखमरी के शिकार हुए. उस वक्त जैसे ही इससे जुड़ा एक एसएमएस फोंगदांग टीम को मिला, टीम से जुड़े साथी सक्रिय हो गए. उन्होंने सक्षम अधिकारियों से मुलाकात की, पत्रकारों तक यह खबर पहुंचाई बाद में सर्वोच्च न्यायालय के हस्तक्षेप से उन इलाकों में अनाज भिजवाया गया.

हेमंत लारमा से जब फोंगदांग को लेकर दिल्ली में बातचीत हुई, तो उन्होंने साफ-साफ कहा कि अब फोंगदांग की विषयवस्तु को लेकर उनकी टीम गंभीर हो गई है. उन्होंने तय किया है कि एक दिन में एक से अधिक फोंगदांग विशेष परिस्थितियों को छोड़कर जारी नहीं करेंगे. यदि कोई सूचना दिल्ली के चकमा समुदाय के लोगों के लिए खास तौर पर है तो वह संदेश बेवजह मिजोरम के लोगों को नहीं भेजा जाएगा.

फोंगदांग की मदद से देश भर में पिछड़े समझे जाने वाले मिजोरम के चकमा बहुल जिले लुंगलई, लुंगतलई और ममित के लोगों की मदद उनसे सैकड़ों किलोमीटर की दूरी पर दिल्ली में रहने वाले हेमंत और उनके साथी जिस तरह से कर रहे हैं उससे साबित हुआ है कि आप दूर रहकर भी अपने लोगों के दुख-दर्द के साथी बने रह सकते हैं. ●